उपसंहार

"दाम्पत्य सम्बन्ध" भारतीय पत्रिका में वह अर्थनीति की कल्पना है जिसके लिए पत्र-पत्रिका पर एक-दूसरे की महत्वपूर्ण अपेक्षा रखते हैं। इतिहास पत्रिका की अर्थनीति का कहा गया है। अर्थनीति शब्द केवल प्रेम की एक भावना अभिव्यक्ति ही नहीं है, जीवन के व्यापक रूप से दक्षिण-पश्चिम भारत के नीति की दृष्टि से तलाश करने वाले हैं। यह यूरोप के काव्य द्वारा दक्षिण-पश्चिम भारत के विश्वास में दाम्पत्य सम्बन्ध का गीत है, जो राज के प्रेम बने हुए हैं।

दाम्पत्य विपरीतिका के प्रेम के अन्वेषण के हिंदी के विपरीतिक प्रकरणों को विपरीत दृष्टिकोण से अपनाने करने पर जो अनेक कारण पुष्कर में आये उनको तामाजी और मनोवैज्ञानिक कारण शास्त्रीय तामाजी विपरीतिक परिदृश्य में व्यापक स्वतंत्रता पर परिचय करते हैं। "तामाजी" विपरीतिक के अन्वेषण पत्र-पत्रिका की अर्थनीति का लेख गम्भीर रिश्ते दृष्टिकोणिक होती है। "मनोवैज्ञानिक" विपरीतिक कारण में भावायन का अर्थ अभिव्यक्ति गुप्त है जिसमें तंत्र, स्फुर्ति, अवलोकन एवं अभि आदि भाव सत्यापित है। अभि का गुप्त विपरीत के दाम्पत्य -प्रेम को विशेष रूप से गुप्त रहा है।

पहले प्रेम और दृष्टि का आगाज होता है। उसमें जब कल हरी शिखर दृष्टि पन्ने लगता है, तब वातावरण विध्वसन हो उठता है। रूके के दृष्टि पर कोई केवल रवाने पीने और तोने के उपयोग में जाने वाला एक मात्र तालमेल उत्पन्न होता है। एक ही जंग के नीचे रहने पर भी, वे उनकी सेवा रहते हैं। कदम बढ़ती जाती है, परशर घुमना, देख, आद्वश जैसे विशेष भाव पन्ने में जाते हैं। ऐसे विध्वसन वातावरण में पत्ता खुलते विश्वासों का मन-मुण्डारों से गुप्त हो जाता है। अब के बाल मनो चिपकित इस तथ्यसेवा
पुरातं: सहमत है कि बालबीचन के जटिल व्यविलय के प्रभृति अनेक कारणों में से एक शासक कारणपरिवार में माता-पिता के रागात्मक सम्बन्धों का अभाव ही होता है। बाल जीवन का विविध आज के घुम की गहन समस्या बनता रहा है। ऐसे बच्चों का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ विकास असहाय है। इस प्रकार के बाल विराह लुभाना जी के "लातंके पलाश" कान्ता भारती के "शेत की माली" माता पिता पसंद के "जड़ों दी पड़ने वाली है, आरोहो व निमी के "मन के बन्ध", तिमी हरिश्चन्द्र के "सम्बन्धों के किनारे" आदि हिंदी के अनेक उपन्यासों में धार्मिक होता है।

दामोदर के तनावपूर्ण सम्बन्धों का साधक स्वयं ज्ञान उदाहरण गानुरेखा राह का "आफिक बट्टी" उपन्यास प्रस्तुत करता है। माता-पिता के व्यवहार में उत्पन्न समय पद्धता आने वाले जंगल स्वर्ग उसके व्यवहार की जंतुत्व माता-पिता के लिए एक गहन समस्या बन जाती है। बट्टी का व्यवहार जन्म-संबंध असामान्य नहीं है। उसके व्यवहार के जंतुत्व बनते जाने के प्रमुख माता-पिता के उत्पन्नतर होते जाते तनावपूर्ण सम्बन्धों के साथ संरचना होती है। जिस कस्तु तीर्थ बट्टी के माता-पिता का सम्बन्ध विवेचन होता है, वह कस्तु देवी को सालता ही नहीं पाता से कहीं अभिक गम्भीर बना जाता है। मम्मी की पापा से बड़ही कहीं एकी वाली" कुछ समय उपरांत जब वह अपनी मां को डी.टी. जोशी से जुड़ते हुए देखा है। तीतिता द्वारा उपेक्षित बलक मां की इस उपेक्षा को सहन नहीं कर पाता। उसके मन में मम्मी को लेकर उत्पन्न गम्भीरता और बुद्धि की भावना आत्मा-भिन्न के संत्रात और आश्चर्य का रथ धारण कर लेती है। जो उसके व्यवहार को असामान्य बना देती है। उसके व्यवहार को तुलनात्मके प्रयास में मम्मी असामान्य रहती है, और पापा भी स्वर्ग का असामान्य पाकर उसे हॉटेल में भेज देते है।

बच्चों के जटिल स्वयं असामान्य व्यवहार को जन्म देने वाले माता/का व्यवहार क्या यहीं तमाम हो जाता है? कि दोनों अपनी अलग-अलग दृष्टियाँ बसाकर उसके घुटकारा पर लेगू आज समाज में एक बट्टी नहीं, न जाने कितने बट्टी बाप्ता रहते हैं। अलौकिक उद्घाटन और अपराधी है तो कोई तहत हुआ अन्तर्विकार बन जाता है।

एक दिबम पुरुष मन के तारों को आज्ञा देता है कि जित भारतीय नृत्य को महापुराणों और मन्त्रधर्मों ने अपनी तपस्या और अपने रक्त और पतीने की शुद्धियों से तथा विद्यार्थियों ने अपने सतीत्व और धर्म के बल से जन्म देकर पोषित कर विद्या आत्मविश्वासिय
स्थान प्रदान किया, क्या ये आत्मान्य विश्व उसका पौष्टिक कर सकते हैं? क्या ये स्वस्थ राज्य का निम्नित्त कर सकते हैं? ऐसे अनेकों अनुसंधान पुरातन हैं। एक और मुख्य आराध्य अनेक अनुभव कर विकास के विषय पर दर्शन कर रहा है। दूसरी ओर अपने अन्तः सम्बन्धों की विस्तारित कर अपने विकास को अद्वैत रखने की शक्ति को पूर्ण बना रहा है। वह कैत्ति विरोधा भाषा है!

इत तम्मया का समाधान दाम्पत्यसम्बन्ध में स्मृतिज्ञ लाकर पति-पत्नी है कर सकते हैं, इसका समाधान मा भारती के कोट में अल्प मैक्स है। आज के विकासोन्मुख पारिवारिक ढांचे में जो परिवर्तन आ रहे हैं वे अपेक्षा रहते हैं कि सामाजिक पति-पत्नी के विवाह के साथ-साथ, परिवार के सभी सदस्यों के विवाहों और व्यवहारों में उत्पन्न हो। सामाजिक कारण जो दाम्पत्य सम्बन्धों की विवाह का अनुभव कर उन पर पारिवारिक सदस्य एवं पति-पत्नी को स्वस्थ मस्तिष्क से विकास कर एक आदर्श तथा तुलना तथ्य देनायासिह। वहाँ तक पति पत्नी की अतिक्रम का पूर्ण है, उसाँ दोनों वें पुराता गीत और पूर्णत: सम्बन्ध बिंबपर्यंत तन्पुष्ट लानी तभी साधन है।

मनोवैज्ञानिक कारणों में आत्मान्य व्यवस्थित अतीत स्मृति की कारण में उदार पर सकता है, जब तक मानसिक व्यवस्थित का पूर्ण है वे भी वातावरण की विवाहका की देव होती हैं, जब वातावरण मान्य और क्षमित होगा, तो यह भी सामाजिक स्थिति प्राप्त कर सकता है। महत्त्वाकार व्यक्ति का भाव है, इसको इच्छामुका मोड़ दिया जा सकता है। तथा दाम्पत्य सम्बन्ध में पति-पत्नी को अद्वैत भाव का पूर्णतः विकास करना अति आवश्यक है। गीता, केवल, एवं इंद्राय को "गीता" ते तत्त्व, श्री अक्षराव आदि को "विवाह" ते, उधो, विट्टो, तेजचा वांटि आदि शब्दकों की धौरण एवं कत्त्व विषयक हराक्षता के द्वारा जीता जा सकता है।

आर्थिक कारणों में व्यावसायिक भिन्नता हैनें पर पति-पत्नी दोनों ही ध्यान पूर्वक सहयोगी भावना से रहें तो गम्भीर स्थिति का विवाह तरलता से हो सकता है। व्यावसायिक ध्यानता के कारण जब दोनों को शहदुर्ज ते दूरदिका आभास हो उस समय तुलितहारुस एवं समय निर्धारित कर अद्वैत क्षण साध-साध व्यक्ति करने अति आवश्यक है। जीवन की विश्व समस्याओं के समाधान इतिसमय निर्धारित नहीं होता, निर्धारित किया
ताता है। यात्रा में धरे के भोजन-वाहन की दोहरी भूमिका का निराश करने वाली रित्यां के पृथिवी समाज में दृष्टि और गुरुमोहण दोनों की अपनी विवाह परिवार, विवाहादि एवं सन्तानों में पृथिवी: परिवारी आदि कहलाता है। पत्नी की भी व्यस्तत पति को दृष्टि: समझने का प्रयास करना आवश्यक है। "अत्यधिक असतन्त्र में पति पत्नी को बड़ी हृद-पुस्त की आवश्यकता होती है। अगर पति की आपे के परिवारी विवाह असम्भव है, तब पत्नी के लिए आप के विवाही-सूत्र समाज में ऐसे अनेक बुढ़ी उपयोग हैं, जिनके पत्नी युवा वर्ष से अवकाश पाने पर रित्यां समाज में कर लेती है। रित्यां को इस पुकार के कायां में पति के रूप में की आवश्यकता होती है। "दरिद्रता" पति के परिवार की हो या पत्नी के परिवार की अवस्था आधारित, वर्तमान उनका सानाध पति-पत्नी अपने धरे में किसी भी पाने के छोटे बुढ़ी उपयोग के द्वारा कर सकते हैं।

श्रैणिक केन्द्र में पति-पत्नी के मध्य अनिश्चित या नया विवाह होने पर, विवाह अवस्था की जा सकती है। अवस्था तथा आधुनिक विवाह में पति-पत्नी को विवाह के ताद-ताद तत्त्वशास्त्र द शासीन्ता ऐसे जगत का विवाह अपेक्षा है। उनके भिन्नार्थ में सामाजिक स्थापित करने की अवस्था बड़ी चाहिए।

शास्त्रियों के द्वारा समस्त तथ्य है, कि नारी ही नारी का शुद्ध है। जब तक समाज में, परिवार में नारी की मन से यह भाव दूर नही लगा तब तक परिवारिक क्षेत्र में पति-पत्नी के अपारी सम्बन्धी की दृष्टि: असम्भव है। पुरुष बहुत किती न किती तरह में नारी के अत्यावश्यक ही विवाह होती है। बड़ी और बड़ी के जीत को रित्यां कर ही परिवार में दूह का लागर लहरा तकता है। नारी परिवार में कहीं न कहीं महादाता को लेकर, कहीं हुल परम्पराओं को लेकर पति-पत्नी के बीच दीवार का कार्य करती है। उनके अपने इस ज्ञान के दाये के बादय निकलना होगा।

दानवत्य तात्कालिक क्षेत्र एक तथ्य यह भी है कि अकेले पति या पत्नी ही नहीं दोनों को यह अत्यधिक हो कि उसकी विवाह का तार उसकी व्यावहारिक प्रतिष्ठा
और आत्मिक दर्शा यादे जैसा हो उनकी पति-पिता द पत्नी और माँ की भूमिका हटा चढ़े महत्वपूर्ण गौरव की करेंगी, और पत्नी को अपने अपरिहार्य हितों विशेषतः, त्याग, सहनशीलता, कर्मयोग्यता आदर्श और महादेव को हर स्थिति में
बनाए हुए माँ और पत्नी की भूमिका में गहरी रूढ़ि लेनी होगी।

यदि दुर्भाग्य प्रकाश हो जाये और दामयत्व जीवन की समस्याओं के समाधान में दोनों ने अलग से धीरे से सम्बन्ध विचेष्ट कर लिया हो तो दोनों को उन्नत में शुभभाव का त्याग करके एक अलग मित्र की भूमिका अपने जीवन को मोड़ देना ही ब्रम्हचर्य होगा।
प्रत्येक दामयत्व को सम्बन्ध विचेष्ट की स्थिति को रोकने का पूर्ण प्रयास करना चाहिए, क्योंकि दामयत्व सम्बन्ध सत्सागर-नय सम्बन्ध नहीं होता यह दो विदेशों का ही सम्भवना नहीं दो आत्माओं का सम्भवना है। जिसके पायथ श्रेष्ठ श्रेष्ठ को अबोधता है, जात्मा को परमात्मा से जोड़ने की अभिल कार्यक्षेत्र है।

==

428